Sem. 4
MJ-7

नागरी लिपि की समस्याएँ

यह सर्वमान्य तथ्य है कि विश्व की कोई भी लिपि पूर्णतः वैज्ञानिक या स्वतःपूर्ण नहीं है। अर्थात् ऐसी कोई लिपि नहीं है जिसमें विश्व की सभी भाषाओं में उच्चारित ध्वनियों के लिए लिपि-चिह्न हो। देवनागरी लिपि का भी विकास भारतीय आर्यभाषाओं के सन्दर्भ और परिवेश में ही हुआ है। अतः इस लिपि में इन्हीं भाषाओं की ध्वनियों के ~~लिये~~ लिए लिपि-चिह्न हैं। यद्यपि विवेच्य लिपि ~~एक~~ बहुत हद तक एक वैज्ञानिक लिपि है, तथापि इसकी कुछ कमियाँ भी हैं, जिनके सुधार हेतु प्रयास भी हुए हैं।

सर्वप्रथम नागरी लिपि की विशेषताओं की चर्चा करें तो निम्नलिखित बातें दिखती हैं। —

① लिपि-चिह्नों का क्रम अति वैज्ञानिक है।
② स्वरों में ए तथा ओ को छोड़ सभी के ह्रस्व और दीर्घ रूप हैं।
③ व्यंजन-वर्णों का विभाजन उच्चारण-स्थान के क्रम से है।
④ भारतीय आर्यभाषाओं की ध्वनियों को व्यक्त करने की क्षमता है।
⑤ कोई अन्य लिपि इसके समान ध्वन्यात्मक नहीं है।

उपर्युक्त विशेषताओं के बावजूद इसकी कुछ त्रुटियाँ भी हैं, जो इस प्रकार हैं। —

① कुछ अक्षरों के यहाँ दो-दो रूप हैं। जैसे - रा - ण।
② कुछ लिपि-चिह्न भ्रामक हैं। जैसे - ख - रव।
③ इसकी मात्राओं के प्रयोग में एकरूपता नहीं है। जैसे - कि - की।
④ संयुक्त व्यंजनों के लेखन की अनेक विधियाँ हैं। जैसे - क्र - क्र, या द्ध - द्ध, या पम्प - पंप।
⑤ अक्षरात्मक लिपि होने के चलते ध्वनिशास्त्रीय अध्ययन में कठिनाई आती है।
⑥ वर्णों की अधिकता तथा मात्राओं के प्रयोग की जटिलता के कारण टंकण-मुद्रण में असुविधा है।

वस्तुतः नागरी लिपि की इन्हीं कमियों को दूर करने के उद्देश्य से अनेक व्यक्तियों और संस्थाओं के प्रयासों के कारण आज यह लिपि टंकण-मुद्रण की दृष्टि से व्यावहारिक बन रही है। लिपि का ~~अब~~ इस रूप का प्रभाव है कि कम्प्यूटर आदि में यह लिपि आज प्रचलित हो रही है।

किन्तु रोमन लिपि के अन्ध-समर्थक कुछ विद्वान और राजनेता देवनागरी लिपि को समस्याग्रस्त घोषित करते हैं और रोमन लिपि को अपनाने की सलाह देते हैं। इनका तर्क है कि (क) प्राविधिक दृष्टि से रोमन लिपि नागरी लिपि की अपेक्षा अधिक निर्दोष है। तथा (ख) रोमन लिपि का लेखन अधिक सुविधाजनक है, स्थान और श्रम का अपव्यय नहीं होता है। इसी क्रम में वे नागरी लिपि को कमतर या हेय सिद्ध करते हैं और इसके प्राविधिक पिछड़ेपन, जटिल संयुक्ताक्षर, अवैज्ञानिक मात्राएँ आदि की चर्चा करते हैं। किन्तु, जैसा हम जानते हैं कि कोई भी लिपि पूर्ण नहीं, रोमन लिपि भी पूर्ण नहीं है। —

① रोमन वर्णों की संख्या 26 बताई जाती है किन्तु हर वर्ण के छोटे और बड़े दो-दो रूप हैं।

② प्राविधिक एवं वैज्ञानिक उन्नति जितनी रोमन लिपि और अंग्रेजी भाषा से हुई है, उससे कम जापानी और चीनी लिपि में नहीं है।

③ स्थान और श्रम की दृष्टि से रोमन लिपि का सुविधाजनक होना भी सत्य से परे है। जैसे Ticket लिखने के लिए कम से-कम तीन बार हाथ उठाना पड़ता है, जबकि 'टिकट' लिखने में स्थान-श्रम दोनों की बचत होती है।

④ उच्चारण के अनुरूप लेखन और लेखन के अनुरूप उच्चारण का न होना रोमन लिपि को अवैज्ञानिक सिद्ध करता है।

⑤ रोमन लिपि के पक्ष में राष्ट्रीय एकता का तर्क भी निराधार है — भारतीय भाषाओं की सभी ध्वनियाँ वहाँ नहीं हैं, देश में रोमन लिपि का प्रचार भी सीमित है तथा हमारी सम्पूर्ण साहित्यिक परम्परा से सम्बन्ध विच्छेद करनेवाला होगा।

वस्तुतः देवनागरी लिपि को समस्याग्रस्त कहने के पीछे कोरा राजनीतिक दाव-पेंच ही है। नागरी की जगह रोमन को अपनाने से हमारी राष्ट्रीय अस्मिता ही खतरे में पड़ जाएगी। वास्तविकता यही है कि नागरी लिपि भारतीय भाषाओं की ध्वनियों के लेखन में पूर्ण सक्षम है। हाँ, प्राविधिक दृष्टि से अभी भी इस लिपि में आवश्यक संशोधन अपेक्षित हैं और यह हो भी रहा है। सूचना-विज्ञान के इस युग में ऐसे सॉफ्टवेयर विकसित किए जा रहे हैं कि नागरी लिपि को समस्याग्रस्त कहनेवालों की संख्या नगण्य हो जाएगी।